विश्वास के कार्यः अपने विश्वास के दावे के अनुसार जीना

विश्वास अधीन रहता है

डॉ. डेविड प्लैट

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ याकूब 3:13–4:12 निकालें। जिस पद को हम देखने वाले हैं वह विश्वास के समुदाय में संघर्ष के बारे में, विश्वास के समुदाय में विभाजनों के बारे में बात करता है। और जब मैं इस पद का अध्ययन कर रहा था, मैं आनन्द से भर गया क्योंकि हम जिन बातों को इस पद में देखने वाले हैं वे हमारे बीच में व्याप्त नहीं हैं, और मैं अत्यधिक कृतज्ञ हूँ। साथ ही, इस पद के कारण मैं अपने घुटनों पर आ गया क्योंकि यथार्थ यह है जब हम इन दिनों में विशेषतः अगले वर्ष में आगे बढ़ते हैं और जिसकी ओर परमेश्वर हमें ले जा रहा है, मैं जानता हूँ कि विरोधी खामोश नहीं बैठेगा। विरोध हमें रोकना, हमारा ध्यान भटकाना, हमें निराश करना, और हमें विभाजित करना चाहेगा।

भाइयो और बहनो, हम एक युद्ध में हैं, उन बच्चों की देखभाल के लिए युद्ध जिनकी इस संसार में उपेक्षा की जा रही है, उन लोगों को भोजन खिलाने का युद्ध जिनके पास इस संसार में कुछ नहीं है, उन लोगों तक सुसमाचार को लेकर जाने का युद्ध जिन्होंने पहले कभी इसे नहीं सुना है। और मुझे निश्चय है कि हमारा विरोधी चाहेगा कि वह हमारे ध्यान को इस वास्तविक युद्ध जिसे लड़ना है, से भटका कर हमें हमारे बीच की दूसरी लड़ाईयों में उलझा दे। क्या हमारे यहाँ की कलीसियाओं की कहानी यही नहीं है? इस बात पर लड़ाई कि कालीन किस रंग का होना चाहिए, या संगीत किस प्रकार का होना चाहिए– विभिन्न सन्दर्भों में यह चाहे जो भी हो, इनके द्वारा विरोधी हमारी नजरों और हमारे मनों और हमारी ऊर्जा को वास्तविक युद्ध से दूर रखता है। अतः इस पद में विश्वास के परिवार के रूप में मैं हमें प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि जब हम एक साथ युद्ध में प्रवेश करते हैं तो सावधान रहें, इस पद में बताई गई बातों के विरूद्ध सावधान रहें।

याकूब 3:13,

> *तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रकट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। पर यदि तुम अपने–अपने मन में कड़वी डाह*

और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना। यह ज्ञान वह नहीं जो ऊपर से उतरता है, वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है। क्योंकि जहाँ डाह और विरोध होता है, वहाँ बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है।

पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है। मिलाप कराने वाले धार्मिकता का फल मेल–मिलाप के साथ बोते हैं।

तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ से आ गए? क्या उन सुख–विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते–भिड़ते हैं? तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; इसलिए तुम हत्या करते हो। तुम डाह करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर पाते; तो तुम झगड़ते और लड़ते हो। तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि माँगते नहीं। तुम माँगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से माँगते हो, ताकि अपने भोग–विलास में उड़ा दो।

हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नहीं जानतीं कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? अतः जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है। क्या तुम यह समझते हो कि पवित्रशास्त्र व्यर्थ कहता है, जिस आत्मा को उसने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा करता है जिसका प्रतिफल डाह हो? वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, 'परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।'

इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगो, अपने हृदय को पवित्र करो। दुखी हो, और शोक करो, और रोओ। तुम्हारी हँसी शोक में और तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए। प्रभु के सामने दीन बनो तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा।

हे भाइयो, एक दूसरे की बदनामी न करो। जो अपने भाई की बदनामी करता है या भाई पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था की बदनामी करता है और व्यवस्था पर दोष लगाता है; और यदि तू व्यवस्था पर दोष लगाता है, तो तू व्यवस्था पर चलने वाला नहीं पर उस पर हाकिम ठहरा।

व्यवस्था देने वाला और हाकिम तो एक ही है, जो बचाने और नाश करने में समर्थ है। पर तू कौन है, जो अपने पड़ोसी पर दोष लगाता है? (याकूब 3:13–4:12).

पिता, हमारी प्रार्थना है कि आप हमारी रक्षा करें, आप ऐसी किसी भी बात से हमारी रक्षा करें जिसे आपकी महिमा करने वाले किसी भी काम से हमारा ध्यान भटकाने के लिए शैतान हमारे मार्ग में लेकर आता है। हमारी प्रार्थना है कि आप हमारे जीवनों की रक्षा करें, आप हमारे विवाहों की रक्षा करें, आप हमारे परिवारों की रक्षा करें, और इस विश्वास के परिवार की रक्षा करें। हे परमेश्वर, हमारी प्रार्थना है कि आप हमें इस संसार से मित्रता करने से बचाए रखें और हमें अपने साथ गहरी घनिष्टता की ओर खींचें। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

बुद्धि की दो तस्वीरें, मित्रता की दो तस्वीरें, बोली की दो तस्वीरें, ये सब हमें प्रार्थना की ओर ले जाती हैं।

बुद्धि की दो तस्वीरें

सांसारिक बुद्धि...

बुद्धि की दो तस्वीरें: पहली, सांसारिक बुद्धि। पद 14, 15, और 16: *"पर यदि तुम अपने–अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध में घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना। यह ज्ञान वह नहीं जो ऊपर से उतरता है, वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है।"* क्या आपने इसे समझा? एक बुद्धि है जो नरक से आती है। एक बुद्धि है जो इस संसार में आम है और जो सीधे शैतान से आती है। और खतरा यह है, इससे न चूकें, खतरा यह कि हम सोच सकते हैं कि हम बुद्धिमान हैं और संसार हमसे कह सकता है कि हम बुद्धिमान हैं, परन्तु यथार्थ यह है, कि हमारा सोचने का तरीका और हमारी बुद्धि नरक से है।

संसार में बुद्धि नरक से आती है, यह आत्म–केन्द्रित महत्वाकांक्षा से प्रेरित होती है, *"यदि तुम अपने मन में कड़ी डाह और स्वार्थी महत्वाकांक्षा रखते हो"* (याकूब 3:14). संसार की बुद्धि सब कुछ इस आधार पर नापती है कि इससे आप पर क्या प्रभाव पड़ता है, "मेरे लिए सर्वोत्तम क्या है?" "मैं कैसे तरक्की कर सकता हूँ, अपने आपको आगे बढ़ा सकता हूँ, अपनी प्रशंसा कर सकता हूँ?" क्या यह संबंधों में संघर्ष की जड़ नहीं है? विवाह में, यह सोचना, "मेरे लिए सर्वोत्तम क्या है?" मित्रों और परिवार के साथ संबंधों में सोचना, "मेरे लिए सर्वोत्तम क्या है?" और कलीसिया के सन्दर्भ में, "मेरे सर्वोत्तम क्या है?" आत्म–केन्द्रित महत्वाकांक्षा।

क्या यह अमरीकी स्वप्न का केन्द्र नहीं है? अपना प्रचार करना, अपनी तरक्की करना, आप को आगे रखना, और सुसमाचार कहता है, "अपने आप का इन्कार करो।"

डाहः निरन्तर यह देखना कि आप अपने चारों ओर के दूसरे लोगों से अपनी तुलना कैसे करते हैं। सी.एस. लुईस कहते हैं कि यह सोच हमेशा घमण्ड, प्रतिस्पर्द्धा से जुड़ी होती है, "क्या मैं अपने पास के व्यक्ति से बेहतर हूँ या निम्नतर हूँ?" आत्म–केन्द्रित महत्वाकांक्षा द्वारा प्रेरित। इसी के बारे में याकूब बात कर रहा है। जब उसने कलीसिया में पक्षपात और निर्धनों की उपेक्षा के बारे में बात की, तो वह आत्म–केन्द्रित महत्वाकांक्षा थी, यह सोच कि, "निर्धन लोग, उनके पास मुझे देने के लिए क्या है?" मेरे पैरों के पास बैठ। धनी, ठीक है, उनसे मुझे फायदा हो सकता है, मेज पर बैठ।"

सांसारिक बुद्धि, इस प्रकार की सोच नरक से है, आत्म–केन्द्रित महत्वाकांक्षा से प्रेरित है और इसका परिणाम अव्यवस्था एवं दुष्टता होती है। घरों तथा विवाहों में आत्म–केन्द्रित महतवाकांक्षा का परिणाम अव्यवस्था एवं दुष्टता होती है। कलीसियाओं में अव्यवस्था और दुष्टता का कारण आत्म–केन्द्रित महत्वाकांक्षा है। इस प्रकार की बुद्धि क्रोध, कड़वाहट, कलह, तलाक, झगड़ा, उत्पन्न करती है, सांसारिक बुद्धि से आती है। और याकूब कहता है कि एक और मार्ग है।

ईश्वरीय बुद्धि...

और दूसरा मार्ग ईश्वरीय बुद्धि है जो स्वर्ग से आती है, वह बुद्धि जो स्वर्ग से आती है।

यह हमें वापस याकूब 1 पर ले जाता है, जहाँ उसने कहा, *"यदि तुम में किसी को बुद्धि की घटी हो"* तो वह क्या करे? *"परमेश्वर से माँगे।"* (याकूब 1:5). एक बुद्धि है जिसे दिमागी ज्ञान और व्यवहारिक अनुभव से नहीं पाया जा सकता है। एक बुद्धि है जो केवल परमेश्वर के सामने नतमस्तक होने से, उससे माँगने से ही मिलती है। यह सोचने का बिल्कुल अलग तरीका है, और यह मनुष्य द्वारा उत्पादित नहीं हो सकता।
नीतिवचन में 100 बार बुद्धि का वर्णन है। नीतिवचन के आरम्भ को सुनें, यह नीतिवचन 2:1 हैः

> *हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े, और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचे; और प्रवीणता और समझ के लिए अति यत्न से पुकारे, और उसको चाँदी के समान ढूँढ़े, और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगा रहे; तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा। क्योंकि बुद्धि*

यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुँह से निकलती हैं। वह सीधे लोगों के लिए खरी बुद्धि रख छोड़ता है; जो खराई से चलते हैं उनके लिए वह ढ़ाल ठहरता है। वह न्याय के पथों की देखभाल करता, और अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है। (नीतिवचन 2:1–8).

बुद्धि के लिए परमेश्वर को पुकार, समझ के लिए पुकार, चाँदी या सोने के समान उसे खोज, और वह उसे देगा। यह उसके मुँह से आपके पास आती है। इसी कारण मैं इस बात पर बल देना चाहता हूँ कि मैं नहीं जानता कि मैं क्या कर रहा हूँ, मैं जानता हूँ यह नेतृत्व के सिद्धान्तों में सबसे ऊपर नहीं है। "जब तुम लोगों की अगुवाई करो तो यह सुनिश्चित करों कि उन्हें पता है कि तुम्हारे पास कोई सुराग नहीं है।" मैं जानता हूँ कि यह आज की सर्वाधिक विक्रय वाली पुस्तकों में नहीं है। परन्तु मैं वास्तव में 1राजा 3 में सुलैमान के समान अनुभव करता हूँ, "मैं छोटा लड़का–सा हूँ जो भीतर बाहर आना जाना नहीं जानता। इसलिए मुझे समझने की ऐसी शक्ति दे कि मैं भले बुरे को परख सकूँ।"

और यह वो तस्वीर है जब एक पति और एक पत्नी, जब मित्र, जब एक कलीसिया, जब हम परमेश्वर के सामने आते हैं और हम कहते हैं, "हमें उसकी आवश्यकता है जो केवल आप दे सकते हैं।" अब आत्म–केन्द्रित महत्वाकांक्षा द्वारा प्रेरित नहीं, परमेश्वर–केन्द्रित नम्रता द्वारा प्रेरित, बुद्धि से आने वाले कार्य तथा नम्रता। इससे न चूकें। परमेश्वर की बुद्धि मनुष्य में नम्रता उत्पन्न करती है; संसार की बुद्धि मनुष्य में घमण्ड उत्पन्न करती है। अतः, पतियो, पत्नियो, माताओ, पिताओ, अविवाहितो, छात्रो, अपने आप को परमेश्वर के सामने नम्र करें, परमेश्वर से मान लें, परमेश्वर से अंगीकार करें कि आप इसे नहीं कर सकते हैं, चाहे यह कुछ भी हो, आप अपने बल पर नहीं कर सकते हैं, आपको उसकी आवश्यकता है जिसे केवल वह दे सकता है; यह परमेश्वर–केन्द्रित नम्रता है।
इस प्रकार की बुद्धि जिसका यहाँ वर्णन किया गया है, यदि हमारे पास अधिक समय होता तो हम यहाँ और मत्ती 5:3–12 में धन्य वचनों के बीच देखते।

"जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है" (याकूब 3:17), धन्य वचनः *"धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे"* (मत्ती 5:8). *"फिर मिलनसार"* (याकूब 3:17), *"धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे"* (मत्ती 5:9). *"कोमल,"* (याकूब 3:17), *"धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।"* (मत्ती 5:5). *"मृदुभाव"* (याकूब 3:17), *"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"* (मत्ती 5:3). *"दयालु"* (याकूब 3:17), *"धन्य हैं वे, जो दयावन्त*

हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।" (मत्ती 5:7). *"अच्छे फलों से लदा हुआ, पक्षपात और कपट रहित होता है"* (याकूब 3:17), *"धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएँगे।"* (मत्ती 5:6).

यहाँ तस्वीर उस बुद्धि की है जो परमेश्वर की आशीष से आती है, और इसका परिणाम अव्यवस्था और दुष्टता नहीं होता है। यदि आप ऐसे लोगों के आस–पास हैं जिनमें इस प्रकार की बुद्धि है, तो उसका परिणाम शान्ति और धार्मिकता होता है। और परमेश्वर अपने साथ हमारे संबंधों में तथा दूसरों के साथ हमारे संबंधों में यही चाहता है, शान्ति और धार्मिकता। सत्य की कीमत पर शान्ति नहीं, यह पहले तो पवित्र होता है, यह सत्य है। इस निश्चय की कीमत पर शान्ति नहीं, "अरे हम काम चला लेंगे और अपने सत्य को एक तरफ फेंक देंगे।" नहीं, यह पवित्र है, परमेश्वर की पवित्रता, परमेश्वर की बुद्धि, अपने लोगों में सही और अच्छी शान्ति उत्पन्न करती है। जब लोग एक साथ नम्रता से ऊपर से उतरने वाली उस बुद्धि की अपनी आवश्यकता को मानते हैं तो उसे केवल परमेश्वर ही दे सकता है।

और इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है, अपने जीवन में, परमेश्वर से कहें कि वह आपको इस संसार की बुद्धि, शैतानी बुद्धि से छुटकारा दे। और परमेश्वर से माँगो, पतियो, पिताओ, पत्नियो, माताओ, पुरूषो, स्त्रियो, छात्रो, बच्चो, परमेश्वर से उस बुद्धि को माँगो जो केवल उसकी ओर से आती है। बुद्धि की दो तस्वीरें, जो हमारे जीने की शैली पर प्रभाव डालती हैं।

मित्रता की दो तस्वीरें

यहाँ स्पष्टतः, अध्याय 3 और 4 के बीच एक अन्तराल है, लेकिन मूल पत्री में ऐसा नहीं था। और मेरा विचार है कि याकूब परमेश्वर के लोगों के बीच जिन *"लड़ाइयों और झगड़ों"* की बात करता है (याकूब 4:1), यह इस बात का उदाहरण है कि क्या होता है जब हम इस संसार की बुद्धि के अनुसार जीते हैं। यह अव्यवस्था, कलह, और बुराई है, उसकी बढ़ती है जिसे संक्षेप में पद 4 में बताया गया है जहाँ याकूब कहता है, *"जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।"* यहाँ तस्वीर मित्रता, घनिष्टता की है। और संसार से मित्रता है, संसार से घनिष्टता है, और परमेश्वर से घनिष्टता है। और याकूब कहता है, "तुम्हें दोनों में से एक के साथ घनिष्टता रखनी है, दोनों में से एक से मित्रता रखनी है, तुम दोनों के साथ मित्रता नहीं रख सकते।"

संसार से मित्रता...

"संसार की मित्रता," इसका क्या अर्थ है? यह यह शरीर की पापमय अभिलाषाओं से आती है। *"क्या उन सुख–विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते–भिड़ते हैं?"* (याकूब 4:1). इस विश्वास के परिवार में हम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने शरीर में, हम स्वार्थी लाभ चाहते हैं, हम सांसारिक सुखों की लालसा रखते हैं। और समस्या यह है, जब आप स्वार्थी लाभ की लालसा रखने वाले तथा सांसारिक सुखों की अभिलाषा रखने वाले लोगों को एक साथ रखते हैं, तो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं: *"लड़ाइयाँ और झगड़े, डाह, तुम हत्या करते हो और लालच करते हो"* (याकूब 4:1–2). अब वे वास्तव में एक–दूसरे की हत्या नहीं कर रहे हैं, परन्तु यह हमें पुनः पहाड़ी उपदेश की ओर ले जाता है। कि क्रोध, भाइयों के बीच अपवित्र क्रोध हत्या के समान है। यह गम्भीर बात है। हमारे अन्दर चल रहा युद्ध दूसरों के साथ हमारे संबंधों में प्रकट होता है। क्या यही विवाह की तस्वीर नहीं है? आप दो स्वार्थी पापियों को जीवन भर के लिए जोड़ देते हैं, परिणाम हर दिन के हर पल सौ प्रतिशत शान्ति और सामंजस्य नहीं है। यह शायद आप में से किसी के लिए होगा, मैं नहीं जानता।

परन्तु मुझे याद है जब हेदर और मैं न्यू ऑरलेन्स में रह रहे थे, और वहाँ सेमिनारी में प्रचार करने के लिए एक प्रचारक आया करते थे, और मुझ से उन्हें तथा उनकी पत्नी को बाहर खाने पर ले जाने के लिए कहा गया था। और हेदर तथा मैं उन्हें खाने पर बाहर लेकर गए, बहुत अच्छी शाम थी। इन्होंने बहुत, बहुत वर्षों तक पासबानी की थी, एक बुजुर्ग दम्पत्ति, बहुत मृदु थे। हम उन्हें उनके रहने के स्थान पर छोड़ने के लिए वापस सेमिनारी की ओर लौट रहे थे। और वह व्यक्ति मेरे साथ कार में आगे की सीट पर बैठा था, और पत्नियाँ पीछे बैठी थी, और उन्होंने मुझसे पूछा, "डेविड, क्या तुमने कभी हेदर को खराब मूड में देखा है?" वह एक अजीब सवाल था, और मैं सुनकर हँसने लगा। मैं ने सवाल को हल्के में लेने के इरादे से कहा, "हाँ, शायद एक या दो बार।" लेकिन कार में कोई हँस नहीं रहा था, केवल अजीब सी खामोशी थी। और फिर उन्होंने कहा, उनका नाम चार्ल्स था, उन्होंने अपनी पत्नी, एडना सू से कहा, "एडना सू, मैं नहीं समझता कि मैं ने तुम्हें कभी खराब मूड में देखा है।" और एडना सू ने कहा, "धन्यवाद, चार्ल्स।" कार में पूर्ण खामोशी। हमने उन्हें उनके स्थान पर छोड़ा, और हेदर वापस कार में बैठ गई। और अब ज्यादा खामोशी नहीं थी, ये ऐसा अधिक था, "कभी ऐसा मत कहना कि पहले कभी मेरा मूड खराब था।"

मेरा मतलब है, मेरी पत्नी इस संसार में सबसे मधुर है, लेकिन, हम सबके अन्दर शरीर है, क्या नहीं? हम अपने अन्दर युद्ध करते हैं, और इससे हमारे विवाहों पर असर पड़ता है, और इससे हमारे रिश्तों पर असर

पड़ता है। यह एक–दूसरे के साथ हमारे संबंधों पर प्रभाव डालता है और अन्ततः परमेश्वर के साथ हमारे संबंधों पर प्रभाव डालता है।

संसार की मित्रता शरीर की पापमय लालसाओं से आती है, सांसारिक सुखों की इच्छा से प्रेरित होती है। याकूब कहता है तुम परमेश्वर की ओर नहीं जा रहे हो। *"तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि माँगते नहीं"* (याकूब 4:2), या फिर परमेश्वर के पास जाकर तुम इस संसार की वस्तुओं को ज्यादा माँगते हो। वह कहता है, "हम इस संसार में वस्तुएँ और सुख पाने के लिए परमेश्वर के पास जाते हैं, नहीं।" अब, यह ईश्वरीय बुद्धि नहीं है, यह सांसारिक बुद्धि है जो सांसारिक सुख और संसार के साथ मित्रता और संसार के साथ घनिष्टता के पीछे जाती है।

और डसने वाला अभियोग पद 4 में आता है। इस पत्री में वह अपने पाठकों को हर बार भाइयो, मेरे प्रिय भाइयो, भाइयो, भाइयो कहकर संबोधित करता है। पद 4, *"हे व्यभिचारियो,"* और वह पुराने नियम से डसने वाले रूपक को लाता है, कि जब हम इस संसार की वस्तुओं के पीछे अपना सुख तलाशते हैं, और अधिक तथा बेहतर, बड़े घरों और कारों और वस्त्रों के पीछे दौड़ते हैं, या लैंगिक अनैतिकता हो या अशुद्धता या चाहे जो कुछ भी हो, हम इस ब्रह्माण्ड के परमेश्वर से बचकर दौड़ रहे हैं, उसे धोखा दे रहे हैं। विवाह में व्यभिचार से जुड़ी भावनाओं के बारे में सोच कर देखें। जब हम इस संसार के सुखों के लिए परमेश्वर को त्याग देते हैं तो हम उसके सामने व्यभिचारी हैं।

मैं अपने विवाह में कभी छल नहीं करना चाहता लेकिन उससे भी बढ़कर कभी अपने परमेश्वर से छल नहीं करना चाहता। तस्वीर यह हैः हम दुल्हन हैं और हमारा एक दूल्हा है। और हमारी उसके साथ घनिष्टता है, हमें इस संसार की और संसार द्वारा दी जाने वाली वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है। हे परमेश्वर, इस प्रकार की नजरों से देखने में हमारी सहायता करें।

पद 5 के बारे में मुझे यही पसन्द है। इस पद ने वास्तव में विद्वानों को विस्मित कर दिया है। इस पद का तीन प्रकार से अनुवाद किया जा सकता है। और भाषा के सूक्ष्म भेदों में जाए बिना कि यह ऐसे हो सकता है या वैसे हो सकता है, मेरा विचार है कि इसका सर्वोत्तम अनुवाद इस प्रकार हो सकता है, "परमेश्वर ने जिस आत्मा को हमारे अन्दर रहने के लिए बनाया है उसके लिए अत्यधिक जलन रखता है।"

यहाँ सन्दर्भ के बारे में सोचें, व्यभिचारी लोग जो इस संसार के साथ दौड़ रहे हैं, यहाँ के सुखों की खोज में हैं। और याकूब कहता है, "क्या तुम नहीं जानते कि परमेश्वर तुम्हारे अन्दर की आत्मा के लिए अत्यधिक जलन रखता है?" यह वो तस्वीर है जिसका उसने पुराने नियम में अपने लोगों के प्रति प्रेम को दिखाने के लिए प्रयोग किया है, निर्गमन 34:14, "यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर है।" इसका क्या अर्थ है?

इसका अर्थ है, एक पति के रूप में, मैं अपनी पत्नी के प्रेम के लिए जलन रखता हूँ। मैं उसके प्यार के लिए जलन रखता हूँ। और किसी भी व्यक्ति या वस्तु को मेरा सर्वाधिक विरोध सहना होगा जो उसके प्रेम को मुझ से छीनने का प्रयास करता है, क्या यह स्पष्ट है?

इससे भी महान रीति से, ब्रह्माण्ड का परमेश्वर आपके प्रेम और आपकी चाहत के लिए जलन रखता है, लालसा रखता है, कि जो भी व्यक्ति या वस्तु इस संसार में आपके जीवन से उसे प्रेम को छीनने का प्रयत्न करता है उससे ईश्वरीय ताकत का सामना करना होगा।
और इससे न चूकें, यह कोई ऐसी असुरक्षित जलन नहीं है जो इस बात से भयभीत है कि हम इस संसार में कुछ बेहतर पा लेंगे। यह एक अनन्त रूप से अच्छी जलन है क्योंकि परमेश्वर में जानता है कि जो कुछ उसमें है वह इस पूरे संसार की सारी बातों से भी बढ़कर सन्तोषप्रद है। और परमेश्वर के लोगो, वह आपकी भलाई चाहता है। वह आपकी सन्तुष्टि चाहता है, वह आपको बुलाकर, इस संसार की संपत्तियों तथा महत्वाकांक्षाओं को त्यागने की कठिन आज्ञा भी दे सकता है क्योंकि वह जानता है, और वह जानता है आप जानें कि उसमें अनन्त सुख पाया जाता है। संसार की मित्रता को त्याग दें।

परमेश्वर से मित्रता...
परमेश्वर से मित्रता करें। यह शरीर की पापमय अभिलाषाओं से नहीं आता है, <u>यह परमेश्वर की अनुग्रहकारी इच्छा से आता है।</u>

पद 6, *"वह तो और भी अनुग्रह देता है,"* मुझे यह वाक्यांश पसन्द है। जैसे कि पहले से उसके द्वारा दिया गया अनुग्रह पर्याप्त नहीं है, वह हमें और अधिक देता है। और आप कल सुबह उठते हैं, क्या आप जानते हैं वह क्या करने वाला है? वह आपको और अधिक देगा। पूरे सप्ताह, इस सप्ताह के हर पल, वह आपको और अधिक देगा। और अगले सप्ताह, अधिक; अगले माह, और अधिक; और अधिक। वह रूकता नहीं है, वह अनुग्रह देता रहता है। वह नम्र लोगों को अनुग्रह देता है।

इसे देखने में हमारी सहायता कर। ब्रह्माण्ड का परमेश्वर जो तारों को नाम लेकर बुलाता है, जिसके सामने पहाड़ झुकते हैं और समुद्र जिसकी आज्ञा मानते हैं, वह परमेश्वर आपके प्रेम के लिए जलन रखता है। वह आपके प्रेम के लिए जलन रखता है, वह आपके प्रेम के लिए जलन रखता है, और जब आप स्वयं को उसके सामने दीन करते हैं तो वह आपके ऊपर अपना अनुग्रह उण्डेलने के लिए प्रतिबद्ध है। हम उसके साथ घनिष्टता का आलिंगन करना क्यों नहीं चाहेंगे?

हे परमेश्वर के लोगो, इस संसार से ऊपर देखो। जीने का एक और उच्च धरातल है, जीने की एक और शैली, और यह पृथ्वी के सुखों के लिए नहीं है, यह अनन्त सन्तुष्टि की लालसा से प्रेरित है, अनन्त सन्तुष्टि, ऐसी सन्तुष्टि जो केवल परमेश्वर दे सकता है। और इसका परिणाम परमेश्वर के अधिकार की अधीनता होता है, परमेश्वर के अधिकार के अधीन होना।

मैं जानता हूँ, जब विश्वास के परिवार के रूप में हम मुश्किल वचनों को देखते हैं, वे वचन जो हमें चुनौती देते हैं, हमारे जीन की शैली को, हमारे सोचने के तरीके को, हमारे खर्च करने के तरीके को चुनौती देते हैं, और मैं जानता हूँ कि इसके बीच बिल्कुल निराश हो जाने और यह कहने की परीक्षा है, "मैं तो ये भी नहीं जानता कि क्या करूँ। इतना सब है कि मुझे नहीं पता कहाँ से आरम्भ करूँ।" और मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ, जब कभी आपको ऐसा महसूस होने लगे, जब भी आप परमेश्वर से किसी आज्ञा को सुनें, अधीनता के साथ आरम्भ करें, उसके अधिकार के प्रति अधीनता के साथ और कहें, "ठीक है, मैं आप पर भरोसा करता हूँ। और मुझे आपके अनुग्रह की आवश्यकता है जिसे आपने मेरे जीवन में एक यथार्थ बनाने का वायदा किया है।" और अगस्टीन जो कहा वो सच है, "परमेश्वर जिसकी मांग करता है, परमेश्वर देता है।" कितना बड़ा सच है। अतः, उसके अधीन रहें।

आप उसके अधीन कैसे रहते हैं? आप परमेश्वर की घनिष्टता में बढ़ना चाहते हैं, उसके बाद वह नौ आज्ञाएँ देता है। भाई या बहन, क्या आप परमेश्वर के साथ की घनिष्टता में बढ़ना चाहते हैं? क्या आप परमेश्वर के साथ की घनिष्टता में बढ़ना चाहते हैं? यह करें, पहला, पूरी ताकत से शैतान का विरोध करें। परमेश्वर का विरोध करना बन्द करके शैतान का विरोध करना शुरू करें। आपको पता है हम यह बदलाव कैसे करते हैं? विशेषतः जब हम कठिन आज्ञाओं को सुनते हैं ऐसी आज्ञाएँ जो हमारे जीवनों और हमारी संस्कृति के विचारों के विरूद्ध हैं, तो उनमें हम परमेश्वर का विरोध करते हैं और हम शैतान को गले लगाते हैं। ऐसा न करें! जब हम इन्टरनेट पर किसी साइट पर जाने की परीक्षा में पड़ते हैं, हम परमेश्वर का विरोध करते हैं और शैतान को गले लगाते हैं। ऐसा न करें। शैतान का सामना करें, वह भाग जाएगा। जब आप देखने की

परीक्षा में पड़ते हैं, जब आप बोलने की परीक्षा में पड़ते हैं, जब आप कुछ करने की परीक्षा में पड़ते हैं, खर्च करने की परीक्षा, चाहे जो भी हो, क्रोध, या चिन्ता, आपके जीवन में यह चाहे जो भी है, शैतान का सामना करें, और परमेश्वर की सन्तान, वह तुम्हारे सामने से भाग जाएगा। वह तुम्हारे सामने से भाग जाएगा।

पूरी ताकत से शैतान का सामना करें और फिर जोश के साथ परमेश्वर को खोजें। हे परमेश्वर, याकूब 4:8 के चमत्कारों का अनुभव करने में हमारी सहायता करें, *"परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।"* परमेश्वर से घनिष्टता। जब आप शैतान का सामना करते हैं और परमेश्वर को खोजते हैं, तो परमेश्वर के निकट जाएँ।

पूरी तरह पवित्रता का पीछा करें, *"हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगो, अपने हृदय को पवित्र करो"* (याकूब 4:8). यह बाहरी और आन्तरिक है, अपने हाथों को शुद्ध करो, अपने जीवनों को, और अपने हृदयों को पवित्र करो, अपने विचारों, अपने मन, अपनी लालसाओं, अपने इरादों को। अन्दर–बाहर पूरी तरह, पवित्र बनो। पूरी तरह पवित्रता का पीछा करो, पवित्र बनो।

फिर पाप को गम्भीर मानो। याकूब 4:9, *"दुखी हो, और शोक करो, और रोओ। तुम्हारी हँसी शोक में और तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए।"* क्या यह तनावपूर्ण है? हम इस संसार की वस्तुओं के पीछे भागने में और हमारे परमेश्वर के विरूद्ध आत्मिक व्यभिचार में इतने गिर गए हैं कि हम पाप के ऊपर दुखी होना और रोना और विलाप करना ही भूल गए हैं। भाई या बहन, वह कब था जब अन्तिम बार आप पाप के ऊपर रोए, दुखी हुए, या आपने विलाप किया? और आपका जीवन परमेश्वर के अधीन नहीं है। संसार की मित्रता, हम सोचते हैं यह बड़ी बात नहीं है। याकूब कहता है यह बहुत बड़ी बात है; पाप को गम्भीरता से लो।

अब, कुछ लोग कहेंगे, "तुम इस तरह जीते हो? जीने का कैसे निराशाजनक तरीका है। आपके रोना और विलाप करना और दुखी होना आपके लिए अच्छा कैसे हो सकता है? इसमें आत्म–सम्मान कहाँ है?" और याकूब यहाँ जो कह रहा है उसकी खूबसूरती यहाँ है, याकूब 4:10 में, *"प्रभु के सामने दीन बनो तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा।"* जब आप पाप के कारण रोते हुए, विलाप करते हुए, और दुखी होते हुए अपने आपको परमेश्वर के सम्मुख दीन करते हैं, तो आपको अपने आपको ऊँचा करने की जरूरत नहीं है, परमेश्वर स्वयं इसे आपके लिए करेगा। परमेश्वर आपको ऊँचा उठाएगा। परमेश्वर आपको वह बनाएगा जिसके लिए आपको रचा गया है। आपको अपना दावा करने की आवश्कता नहीं है। स्वयं को दीन करो, वह आपको ऊँचा उठाएगा। पूरी ताकत से शैतान का सामना करो, जोश के साथ परमेश्वर की खोज करो, पूरी तरह

पवित्रता का पीछा करो, पाप को गम्भीरता से लो, और परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखो। वह आपको अनुग्रह देगा, और वह आपको ऊँचा करेगा।

बोली की दो तस्वीरें

सांसारिक बोली...

अब, यह तस्वीर अन्ततः बोली की दो तस्वीरों की ओर ले जाती है जो वास्तव में याकूब 3:1–12 में जो आरम्भ हुआ उसकी समाप्ति है जहाँ डेरिक हमें पिछले सन्देश में लेकर गए थे, इसलिए हम वहाँ अधिक समय नहीं लगाएँगे। बोली की दो तस्वीरें: सांसारिक बोली जो एक–दूसरे को हतोत्साहित करती है। बदनामी करने का अर्थ है किसी भाई के विरूद्ध कुछ कहना, या किसी भाई या बहन के बारे में किसी दूसरे से कहना, इस प्रकार कहना जिससे उनकी उन्नति न हो, जो उनकी आलोचना के लिए कही गई हो। याकूब यहाँ कहता है, "एक–दूसरे की बदनामी से समुदाय की हत्या होती है।" बदनामी विवाहों की हत्या करती है। बदनामी से परिवारों की हत्या होती है। बदनामी से कलीसिया की हत्या होती है। वह इस शब्द का प्रयोग करता है, यह "घृणा" है, तुम मारते हो और लालच करते हो–इस प्रकार मत बोलो।

नीतिवचन 6, छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात हैं जिन से उसको घृणा है: 1) घमण्ड से चढ़ी आँखें; 2) झूठ बोलने वाली जीभ; 3) निर्दोष का लहू बहाने वाले हाथ; 4) अनर्थ कल्पना गढ़ने वाला मन; 5) बुराई करने को वेग से दौड़ने वाले पाँव; 6) झूठ बोलने वाला साक्षी; 7) भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करने वाला मनुष्य। परमेश्वर इससे घृणा करता है।

अपने भाई या बहन, या अपनी पत्नी या बच्चे से झगड़ा न करो। अब, पवित्रशास्त्र में एक स्थान पर कठोर बातचीत और अनुशासन के बारे में बताया गया है। लेकिन प्रेम में, स्वार्थी महत्वाकांक्षा या बुराई में नहीं बल्कि परमेश्वर–केन्द्रित नम्रता में जो आपके भाई या बहन की भलाई की लालसा करती है। उसके लिए एक स्थान है, जो आपके भाई या बहन की उन्नति करता है, लेकिन इसके अन्यथा किसी भी बात से, भागो, शैतान का सामना करो; यह एक–दूसरे को निराश करता है और यह परमेश्वर का निरादर करता है। आप न केवल इस व्यवस्था को तोड़ते हैं कि "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख," बल्कि व्यवस्था को देने वाले को भी चोट पहुँचाते हैं। बदनामी से आपके भाई को ठेस लगती है और परमेश्वर का अनादर होता है।

ईश्वरीय बोली...

अतः अपने आप को ईश्वरीय बोली को दे दो जिससे एक–दूसरे की उन्नति होती है और परमेश्वर की बड़ाई होती है।

अतः, हम पीछे कदम हटाते हैं, और यहाँ हमारे सामने चुनौती है क्योंकि बाइबल हमें बुला रही है कि हम संसार से प्रेम करने के लिए संसार को त्याग दें। क्या यह आपको अजीब लगता है? हमारे समय में यह विचार व्याप्त है कि संसार से प्रेम करने और संसार में आवश्यकताओं को पूरा करने का सबसे उत्तम तरीका संसार के समान बनना है। और याकूब बिल्कुल उल्टा कह रहा है। भाइयो और बहनो, आपका जीवन और आपकी सोच अलग हो। भिन्न लालसाएँ और प्रेम रखें। अलग तरीके से जीएँ। यह स्पष्ट है, तुम्हारी मित्रता इस संसार से नहीं है। आपकी मित्रता अलग है, और यह परमेश्वर से है, ताकि हमारे बारे में वह कहा जा सके, हे परमेश्वर, इस विश्वास के समुदाय में हमारे बारे में वह कहा जा सके, जो इब्रानियों 11 में विश्वास के वीरों के बारे में कहा गया था, "वे इस संसार में अजनबी और परदेशी थे।"

मेरी प्रार्थना है कि इस विश्वास के समुदाय के बारे में, हमारे बारे में यह कहा जाए कि "वे लोग यहाँ के नहीं हैं। वे कहीं और के हैं। ऐसा लगता है जैसे कि वे किसी और स्थान के लिए जी रहे हों।" आप विदेश में जाएँ, एशियाई देश में जाएँ – यदि मैं किसी एशियाई देश में जाता हूँ, तो स्पष्ट है कि मैं बाहर का हूँ। मैं अलग तरह से सोचता हूँ, मैं अलग दिखता हूँ, मैं अलग तरह से बात करता हूँ, मुझे भोजन पसन्द नहीं आ रहा है, और आप बता सकते हैं–अजनबी, परदेशी।

हे परमेश्वर हमारी संस्कृति में ऐसी कलीसिया खड़ी कर जिसका सोचना, और जीना, और कार्य करना, और खर्च करना, और बलिदान करना इतना अलग हो कि संसार कहे, "ये यहाँ के नहीं हैं।" लेकिन उसी साँस में, उन्हें यह अहसास भी हो कि वे जीवन और सच्ची सन्तुष्टि को देख रहे हैं। और फिर वे सोचेंगे, "संसार को त्यागने की प्रक्रिया में, वे वास्तव में हमसे प्रेम कर रहे हैं और हमें दिखा रहे हैं कि एक और मार्ग है, एक और मार्ग है।" और यह हमें प्रार्थना की ओर लाता है।

विश्वास में एक प्रार्थना

हे परमेश्वर, मसीह की महिमा के लिए, संसार की आवश्यक आत्मिक और भौतिक जरूरतों के बीच हम अपने मन आपको समर्पित करते हैं। अलग तरह से सोचने में हमारी सहायता करें। हम अपना दिल आपको समर्पित करते हैं। हमें अलग लालसाएँ, स्वर्गीय लालसाएँ दे। हम अपनी वाणी आपको समर्पित करते हैं। आने वाले दिनों में, हमारी सहायता करें कि हम हर समय और हर तरह से आपकी महिमा के लिए बोलें।

और हम अपना जीवन आपको समर्पित करते हैं। हम आपके साथ घनिष्टता चाहते हैं, आपके साथ मित्रता चाहते हैं, आपसे बुद्धि चाहते हैं, और बोली जिससे आपकी बड़ाई हो।

और मैं चाहता हूँ कि इस वचन के प्रत्युत्तर में हम अपना जीवन परमेश्वर के सामने समर्पित करें। अपने मन को परमेश्वर की महिमा और उसकी महानता पर लगाएँ। यदि हमें संसार को ठीक से देखना है, तो पहले हमें परमेश्वर को ठीक से देखना होगा, उसे उसके विशाल, महिमामय दृष्टिकोण से देखना होगा। अपनी वाणी से परमेश्वर की बड़ाई करें उसकी महिमा करें।